कक्षा–12

विषय–अर्थशास्त्र

पाठ–1

व्यष्टि अर्थशास्त्र (परिचय) भाग–1

Presented By.
गिरीश चन्द्र पुनेडा
(प्रवक्ता अर्थशास्त्र)
रा0इ0का0 गोरंगचौड़, पिथौरागढ़

1– अर्थ व्यवस्था।

2– आर्थिक क्रियाएँ।

3– आर्थिक समस्या (चयन की समस्या)।

4– अर्थशास्त्र की केन्द्रीय समस्याए।

5– अर्थशास्त्र की विषय वस्तु।

6– अर्थशास्त्र की प्रकृति।

7– व्यष्टि (सूक्ष्म) अर्थशास्त्र।

8– समष्टि (व्यापक) अर्थशास्त्र।

9– व्यष्टि तथा समष्टि अर्थशास्त्र में अन्तर।

10– अभ्यास हेतु प्रश्न।

सन्दर्भ सूची–

1– सन्दर्भ NCERT पाठय पुस्तक कक्षा–12

2–अर्थशास्त्र–सी0 सिंह एवं डा0अनुपम अग्रवाल।SBPD पब्लिकेशन्स ।

3–अर्थशास्त्र डा0एम0 के0 गुप्ता। चित्रा प्रकाशन।

अर्थशास्त्र के जनक प्रो0 एडम स्मिथ के अनुसार '' अर्थशास्त्र धन का विज्ञान है''

अर्थ व्यवस्था– एक अर्थ व्यवस्था विभिन्न आर्थिक क्रियाओं का योग होता है, आर्थिक क्रियाओं से आसय उन क्रियाओं से है जिनका सम्बन्ध धन कमाने व धन खर्च करने से होता है। आर्थिक क्रियाऐं अर्थशास्त्र की अध्ययन सामग्री का (Subject Matter) का एक महत्वपूर्ण घटक है।

आर्थिक क्रियाओं के प्रकार–

आर्थिक कियाऐं

उत्पादन	उपभोग	विनिमय	निवेश
(Production)	(Consumption)	(Exchange)	(Investment)

उत्पादन– उत्पादन वह आर्थिक क्रिया है जिसका सम्बन्ध वस्तुओं और सेवाओं की उपयोगिता अथवा मूल्य में वृद्धि करने से है, उत्पादन अर्थशास्त्र का एक महत्वपूर्ण विभाग है जिसमें इस बात का अध्ययन किया जाता है कि धन का उत्पादन कैसे और किन–किन साधनों से होता है।

उपभोग– उपभोग वह आर्थिक क्रिया है जिसमें व्यक्तिगत तथा सामूहिक आवश्यकताओं की सन्तुष्टि के लिए वस्तुओं और सेवाओं की उपयोगिता का उपभोग किया जाता है। जैसे भोजन करना, कपडा पहनना आदि।

विनिमय– विनिमय वह क्रिया है जिसमें किसी वस्तु या उत्पादन के साधन का मुद्रा द्वारा क्रय विक्रय किया जाता है। इस क्रिया को कीमत निर्धारण (Price Determination) भी कहते हैं।

निवेश– निवेश वह आर्थिक क्रिया है जिसका सम्बन्ध भविष्य में वस्तुओं तथा सेवाओं के उत्पादन के लिए पूँजीगत वस्तुओं के उत्पादन से है। निवेश द्वारा मानव की आवश्यकताऐं प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से संतुष्ट होती है।

आर्थिक समस्या (चयन की समस्या)– आर्थिक समस्या मूल रूप से साधनों की दुर्लभता (सीमितता) की समस्या है। सीमितता का अर्थ है–साधनों की कुल पूर्ति उनकी कुल मांग से कम होना है (मांग > पूर्ति) मांग तथा पूर्ति में असंतुलन के कारण आर्थिक समस्या उत्पन्न होती है।

मनुष्य की आवश्यकताऐं असीमित (अनन्त) हैं। किन्तु उनकी पूर्ति के लिए उसके पास साधन सीमित हैं जिनके वैकल्पित प्रयोग सम्भव हैं। अतः प्रत्येक उपभोक्ता का यह प्रयास होता है कि वह अधिक से अधिक आवश्यकताओं की संतुष्टि करे। इसलिए उसे यह चयन (चुनाव) करना पडता है कि वह किन–किन वस्तुओं का कितनी मात्रा में उपभोग करे। चयन की यह समस्या ही आर्थिक समस्या को जन्म देती है। वास्तव में चयन की समस्या ही मौलिक रूप से आर्थिक समस्या है।

अर्थशास्त्र की केन्द्रीय समस्याऐं– जिस प्रकार व्यक्ति विशेष के पास साधन सीमित हैं और आवश्यकताऐं असीमित हैं उसी प्रकार प्रत्येक देश (अर्थव्यवस्था) के पास भी साधन सीमित किन्तु लक्ष्य (साध्य) असीमित होते हैं। साधनों की सीमितता के कारण उसे भी कुछ विशिष्ट विषयों पर चयन की समस्या का सामना करना पडता है, जैसे–

1– किस वस्तु का कितनी मात्रा में उत्पादन किया जाय।

2– उत्पादन के लिए किस तकनीक को अपनाया जाय।

3– उत्पाद किसके लिए किया जाय।

ये समस्याऐं ही अर्थव्यवस्था की आधारभूत समस्याऐं (केन्द्रीय समस्याऐं) कहलाती है।

अर्थशास्त्र की विषय वस्तु– विभिन्न अर्थशास्त्रियों ने अर्थशास्त्र की विषय सामग्री को चार वर्गों में बॅाट कर विश्लेषण किया है।

1– धन सम्बन्धी विचारधारा– प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों एडम स्मिथ, जे0बी0से0, वाकर, सीनियर आदि में धन, इसके अर्जन, वितरण एंव प्रयोग को अर्थशास्त्र की विषय सामग्री में सम्मिलित किया है। इन अर्थशास्त्रियों ने आर्थिक मानव व उसकी क्रियाओं को भी अर्थशास्त्र की विषय सामग्री माना है।

2– कल्याणवादी विचाारधारा– कल्याणवादी अर्थशास्त्रियों मार्शल, पीगू व कैनन आदि ने अर्थशास्त्र की विषय सामग्री में धन के स्थान पर मानव कल्याण के विचार की स्थापना की, इस विचार के अनुसार अर्थशास्त्र में उन आर्थिक क्रियाओं को सम्मिलित किया जाना चाहिए जिनका सम्बन्ध भौतिक कल्याण से होता है।

3– दुर्लभता (सीमितता) सम्बन्धी विचारधारा– राविन्स ने अर्थशास्त्र की विषय सामग्री में मानव व्यवहार की उन क्रियाओं को सम्मिलित किया है जिनमें मानव अपने सीमित साधानों तथा असीमित

आवश्यकताओं को पूरा करने का प्रयास करता है। अनके अनुसार अर्थशास्त्र की वास्तविक समस्या चयन की समस्या है।

4— विकास केन्द्रित विचारधारा— आधुनिक अर्थशास्त्रियों ने विकास केन्द्रित क्रियाओं को अर्थशास्त्र की विषय सामग्री में सम्मिलित किया है। सैम्मुलसन के अनुसार अर्थशास्त्र की विषय सामग्री में सीमित साधनों के विवरण एंव आर्थिक विकास दोनो को सम्मिलित किया जाता है।

अर्थशास्त्र की प्रकृति—(वास्तविक बनाम आदर्श विज्ञान)—

1— अर्थशास्त्र वास्तविक विज्ञान के रूप में— सकारात्मक रूप (Economics as a Positive Science) वास्तविक विज्ञान में केवल 'कारण' एंव परिणाम (Cause and effect) के सम्बन्ध का विश्लेषण किया जाता है। आर्थिक पहलु में क्या है (What Is) का विश्लेषण अर्थशास्त्र में किया जाता है। प्रो0 जे0बी0से, सीनियर एंव प्रो0 राविन्स जैसे अर्थशास्त्रियों ने इसी आधार पर अर्थशास्त्र को वास्तविक विज्ञान की श्रेणी में रखा है।

2— अर्थशास्त्र आदर्श विज्ञान के रूप में— (Economics as a Normative Science)— आदर्श विज्ञान का सम्बन्ध ''क्या होना चाहिए'' प्रश्न से है। जिसमें आर्थिक पहलुओं की अच्छाई एंव बुराई के सम्बन्ध में विश्लेषण किया जाता है। आधुनिक अर्थशास्त्रियों मार्शल, पीगू, हाट्रे, कीन्स आदि का एक बडा वर्ग यह स्वीकार करता है कि अर्थशास्त्र केवल एक वास्तविक विज्ञान ही नहीं बल्कि उसका स्वरूप आदर्शात्मक है।

अर्थशास्त्रः वास्तविक एंव आदर्शात्मक विज्ञान दोनों है— अर्थशास्त्र का चरित्र दोनो प्रकार का है वास्तविक भी और आदर्श भी। फेडमैन के अनुसार— अर्थशास्त कभी वास्तविक विज्ञान होता है और कभी आदर्श विज्ञान। आर्थिक समस्या का समाधान कैसे होता है, यह वास्तविक विज्ञान का विषय है, और समस्या का समाधान कैसे होना चाहिए यह आदर्श विज्ञान का विषय है।

व्यष्टि (सूक्ष्म) अर्थशास्त्र Micro Economics)— सूक्ष्म अर्थशास्त्र में अर्थव्यवस्था की छोटी—छोटी इकाइयों को सम्मिलित किया जाता है, जैसे एक उपभोक्ता, एक उत्पादक, एक फर्म, एक उद्य ोग आदि।

परिभाषायें— (1) बोल्डिंग के अनुसार— ''सूक्ष्म अर्थशास्त्र आर्थिक विश्लेषणों की वह शाखा है जो व्यक्तिगत इकाई के आर्थिक व्यवहार का अध्ययन है, न कि इकाइयों के समूह का''।

(2) हैण्डरसन तथा क्वाण्ट के अनुसार— ''व्यष्टि अर्थशास्त्र में व्यक्तियों के ठीक से परिभाषित समूहों की आर्थिक क्रियाओं का अध्ययन होता है''।

व्यष्टि अर्थशास्त्र की विशेषताऐं (Characteristics of Micro Economice) –

व्यष्टि अर्थशास्त्र की प्रमुख विशेषतायें निम्न है–

1– व्यक्तिगत आर्थिक इकाइयों का अध्ययन– जैसे व्यक्तिगत आय, व्यक्तिगत उत्पादन, उपभोग, व्यक्तिगत लागत, की व्यवस्था करना।

2– अति सूक्ष्मचरों का अध्ययन– जैसे एक फर्म एक उद्योग, एक उपभोक्ता, एक उत्पादक आदि का अध्ययन।

3– व्यक्तिगत कीमत निर्धारण का अध्ययन– सूक्ष्म आर्थिक विश्लेषण में मॉग व पूर्ति दशाओं के आधार पर व्यक्तिगत इकाइयों की कीमत का निर्धारण किया जाता है।

समष्टि अर्थशास्त्र (Macro Economics) – समष्टि अर्थशास्त्र सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था के स्तर पर आर्थिक क्रियाओं का अध्ययन करता है, उदाहरण के लिए समष्टि अर्थशास्त्र में राष्ट्रीय आय, राष्ट्रीय बचत, राष्ट्रीय विनियोग, कुलरोजगार, कुल उत्पादन, सामान्य कीमत स्तर आदि का अध्ययन किया जाता है।

व्यष्टि एंव समष्टि अर्थशास्त्र में अन्तर–

व्यष्टि अर्थशास्त्र (Mirco Economics)	**समष्टि अर्थशास्त्र (Marco Economics)**
1– व्यक्तिगत स्तर पर आर्थिक क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है, एक उपभोक्ता, एक फर्म एक उत्पादक। 2– व्यक्ति और व्यक्तिगत व्यवहार का अध्ययन होता है। 3– एक वस्तु की कीमत के निर्धारण का अध्ययन होता है। 4– व्यष्टि आर्थिक समस्याओं के निदान में कीमत संयंत्र (Price Mechanism) अर्थात मॉग और पूर्ति बलों की किया निर्णायक होती है।	1– सम्पूर्ण आर्थिक क्रियाओं का अध्ययन होता है, जैसे राष्ट्रीय आय, कुल उपभोग, सामान्य कीमत स्तर। 2– समाज और समाज के व्यवहार का अध्ययन होता है। 3– सामान्य कीमत स्तर का अध्ययन होता है। 4– समष्टि आर्थिक समस्याओं जैसे रोजगार, गरीबी, स्फीति आदि के समाधान में सरकारी भूमिका निर्णायक होती है।

अभ्यास हेतु प्रश्न–

प्रश्न 1– सूक्ष्म (व्यष्टि) अर्थशास्त्र क्या है ? सूक्ष्म अर्थशास्त्र की परिभाषा दीजिए ?

प्रश्न 2– चुनाव की समस्या क्या है ? चुनाव की समस्या के दो कारण बताइयें ?

प्रश्न 3– अर्थशास्त्र की केन्द्रीय समस्यायें कौन–कौन सी है ? ये क्यों उत्पन्न होती हैं ?
प्रश्न 4– अर्थशास्त्र की विषम वस्तु की विवेचना कीजिए ?
प्रश्न 5– व्यष्टि अर्थशास्त्र को परिभाषित कीजिए ?
प्रश्न 6– समष्टि अर्थशास्त्र से आप क्या समझतें हैं ?
प्रश्न 7– व्यष्टि तथा समष्टि अर्थशास्त्र में अन्तर स्पष्ट कीजिए ?
प्रश्न 8– सीमितता का क्या अर्थ है ?
प्रश्न 9– उपभोक्ता किसे कहते हैं ?
प्रश्न 10– आर्थिक क्रिया को परिभाषित कीजिए ? आर्थिक क्रियाओं के विभिन्न प्रकार स्पष्ट कीजिए ?
प्रश्न 11– अर्थशास्त्र कला एंव विज्ञान दोनो है, कैसे ?

सन्दर्भ सूची–

1– सन्दर्भ NCERT पाठय पुस्तक कक्षा–12

2–अर्थशास्त्र–सी0 सिंह एवं डा0अनुपम अग्रवाल।SBPD पब्लिकेशन्स ।

3–अर्थशास्त्र डा0एम0 के0 गुप्ता। चित्रा प्रकाशन।